नागरिकशास्त्र का स्वरूप
(Nature of Civies)

प्रश्न (2)—'नागरिकशास्त्र विज्ञान है अथवा कला या दोनों—विवेचना कीजिए। or नागरिकशास्त्र का प्रकृति का विवेचन कीजिए

"Is Civics a Science or art or both."—Discuss.

अथवा

नागरिकशास्त्र विज्ञान और कला दोनों है—व्याख्या कीजिए।

"Civics is a Science as well as Art.—Explain.

नागरिकशास्त्र एक विज्ञान है अथवा कला, इस सम्बन्ध में विभिन्न विद्वानों में पर्याप्त मतभेद है। कुछ विद्वान उसे विज्ञान कहते हैं, कुछ कला की संज्ञा देते हैं, और कुछ के अनुसार वह विज्ञान और कला दोनों हैं। यह सिद्ध करने के लिए विद्वानों ने अपने-अपने मत भी दिये हैं।

क्या नागरिकशास्त्र एक विज्ञान है ?
(Is Civics a Science)

विज्ञान और उसके कार्य—नागरिकशास्त्र विज्ञान है अथवा नहीं यह स्पष्ट करने के पूर्व यह समझ लेना कि विज्ञान क्या है और उसके कार्य क्या हैं, अत्यन्त आवश्यक है। किसी विषय के क्रमबद्ध और सुव्यवस्थित ज्ञान को विज्ञान कहा जाता है। प्रसिद्ध विद्वान गार्नर का मत है, "विज्ञान किसी विषय का वह क्रमबद्ध ज्ञान है जो उचित प्रकार के निरीक्षण, प्रयोग, अध्ययन तथा वर्गीकरण द्वारा प्राप्त होता है।"

Science is a knowledge relating to a particular subject acquired by a systematic observation, experience or study which have been co-ordinated, systematised and classified." —Garner

एक अन्य विद्वान के अनुसार, "विज्ञान का अर्थ उस विद्या से है जिसका क्रमबद्ध नियम के अनुसार अध्ययन किया जा सके। जो कारण और कार्य के मध्य सम्बन्ध स्थापित कर सके।" अतएव हम कह सकते कि वे सभी विषय जिनका अध्ययन एक क्रमबद्ध रूप में होता है और उनका ज्ञान निरीक्षण, प्रयोग, अध्ययन, अन्वेषण, एवं वर्गीकरण द्वारा प्राप्त होता है, विज्ञान के अन्तर्गत आते हैं। विज्ञान का कार्य निरीक्षण एवं वर्णन, प्रयोग, परीक्षण, कारण और फल का सम्बन्ध बताना और आदर्श विवेचन। जिस विषय में ये समस्त कार्य आते हैं, विज्ञान है।

नागरिकशास्त्र विज्ञान क्यों है ?—नागरिकशास्त्र में विशेष विषय से सम्बन्धित तथ्यों, घटनाओं एवं वस्तुओं का निरीक्षण तथा वर्णन होता है। यह शास्त्र राज्य सरकार, विश्व-संघ आदि का सम्यक् विवेचन प्रस्तुत करता है।

Scanned with CamScanner

नागरिकशास्त्र में भी राज्य, सरकार, राष्ट्र-समुदाय आदि की परिभाषा की जाती है एवं उनका वर्गीकरण आदि की परिभाषा की जाती है एवं उनका वर्गीकरण किया जाता है। इस शास्त्र में विज्ञान की भाँति ही प्रयोग होता है। राज्य, सरकार, विश्व-संघ आदि के नियमों का निर्माण करके उनका प्रयोग किया जाता है। विज्ञान की भाँति ही यह शास्त्र और कार्य के सम्बन्धों को स्पष्ट करता है और नियमों का निर्माण करता है। इस शास्त्र में विज्ञान की भाँति ही शुद्ध परीक्षण होता है। यह शास्त्र सिद्धान्तों का निर्माण करता है। इस शास्त्र में विज्ञान की भाँति शुद्ध परीक्षण होता है। यह शास्त्र सिद्धान्तों का निर्माण करके अपने कार्य की समाप्ति नहीं समझ लेता, वरन् अपने सिद्धान्तों को सत्यता की कसौटी पर कसता है। वह तथ्यों, उपादानों और वस्तुओं का आदर्श विवेचन करता है। लार्ड ब्राइस ने लिखा है कि नागरिकशास्त्र या राजनीतिशास्त्र वैसा ही विज्ञान है, जैसा कि खगोल विद्या या खगोल विज्ञान।" दूसरी ओर नागरिकशास्त्र में विभिन्न शासन-पद्धतियों को तर्क एवं व्यावहारिक प्रयोग की कसौटी पर कस कर यह मत स्पष्ट किया गया कि प्रजा-तन्त्रात्मक शासन-पद्धति अन्य पद्धतियों से श्रेष्ठ है। साथ ही इसको स्पष्ट करने के लिए भली-भाँति विवेचन भी किया गया। अतएव हम संक्षेप में कह सकते हैं कि नागरिकशास्त्र मे नागरिक जीवन से सम्बन्धित सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक ज्ञान का विवेचन निरीक्षण, परीक्षण, एवं प्रयोग द्वारा किया जाता है, इसलिए नागरिकशास्त्र एक विज्ञान है।

नागरिकशास्त्र पूर्ण विज्ञान नहीं है—यह ठीक है कि नागरिकशास्त्र को विज्ञान की कोटि में रखा जा सकता है, परन्तु यह भौतिक शास्त्र, रसायनशास्त्र आदि की भाँति पूर्ण विज्ञान नहीं है। नागरिकशास्त्र जीवन या समाज का ज्ञान कराता है। सामाजिक मान्यताएँ अत्यन्त जटिल एवं परिवर्तनशील होती हैं। इसलिए नागरिकशास्त्र में कोई ऐसे नियम नहीं बनाए जा सकते जो हर स्थिति में और हर जगह ठीक उतरें। इस सम्बन्ध में श्री एस० वी० पुणताम्बेकर का निम्न कथन पूर्ण सत्य हैं :—

"Civics is a science. It lays down some laws or rules for guidance. But these laws do not possess the definite character of physical laws."

—S. V. Puntambekar

अन्य पूर्ण विज्ञानों की भाँति नागरिकशास्त्र गणित से सम्बन्धित नहीं है। इस शास्त्र द्वारा निर्धारित सिद्धान्तों में निश्चितता नहीं लाई जा सकती है। इस शास्त्र में प्रयोग उस रीति से नहीं किए जा सकते हैं, जिस रीति से भौतिक शास्त्र या रसायनशास्त्र में किये जाते हैं। रसायनशास्त्र एवं भौतिकशास्त्र के विद्यार्थियों द्वारा प्रयोगशालाओं में किये गये प्रयोग कोई निश्चित निष्कर्ष स्पष्ट करते हैं परन्तु नागरिकशास्त्र में इस तरह का प्रयोग नहीं हो सकता। उदाहरण के लिए हम सभी यह कहते हैं कि लोकतन्त्र शासन सबसे अच्छा शासन है, परन्तु यह बात उतनी सत्य नहीं है जितनी कि यह बात कि हाईड्रोजन और आक्सीजन मिलकर पानी बनाते हैं। अनेक लोकतन्त्रातत्मक देशों में जनता अत्यन्त दुःखी है। नागरिकशास्त्र प्रयोग द्वारा यह सिद्धान्त प्रस्तुत करता है कि असमानता के कारण ही क्रान्तियाँ होती हैं। परन्तु किसी देश में राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक असमानता होते हुए भी वहाँ क्रान्ति होगी यह नहीं और उस क्रान्ति का स्वरूप क्या

Scanned with CamScanner

होगा, यह निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता है। संक्षेप में कह सकते हैं कि नागरिकशास्त्र में अन्य प्राकृतिक विज्ञानों की भाँति बिल्कुल ठीक प्रयोग करना और निश्चित फल बताना सम्भव नहीं है। और इसलिए नागरिकशास्त्र पूर्ण विज्ञान नहीं है। पुणताम्बेकर का यह कहना है कि "नागरिकशास्त्र नागरिकता का विज्ञान एवं दर्शन है।"

"Civics is the Science and philosophy of citizeuship.
—Puntambekar

अन्त में हम इसी निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि नागरिकशास्त्र विज्ञान तो है परन्तु वह पूर्ण विज्ञान नहीं है। उसे कोरा विज्ञान नहीं कहा जा सकता है। यह विज्ञान के अतिरिक्त कुछ और भी है।

क्या नागरिक शास्त्र कला है ?
(Is Civics an Art ?)

कला और उसके कार्य—एक विद्वान का कथन है—"वास्तविक जीवन में ज्ञान का प्रयोग ही कला हैं।"

"Art is the application of knowledge to the real life"

कला शब्द संस्कृत भाषा के कल् शब्द से बना है जिसका अर्थ होता है करना। परन्तु व्यावहारिक रूप में कल् शब्द का अर्थ सुन्दर लिया जाता है। इसलिए कला वह गुण या कौशल है जिसके द्वारा चीजों को सुन्दर बनाया जाता है।

कला का कार्य असुन्दर के स्थान पर सुन्दर का प्रतिपादन है। अतएव कला और सुन्दरता यह दोनों शब्द एक दूसरे से जुड़े हैं। जो बात या वस्तु सुन्दर होती है हम उसे ही अपनाते हैं। अतएव कला का सम्बन्ध व्यावहारिक जीवन से है।

नागरिकशास्त्र कला है—नागरिकशास्त्र को कला के अन्तर्गत रखा जाता है। यह शास्त्र आदर्श समाज के निर्माण का मार्ग प्रदर्शित करता है। वह यह बताता है कि आदर्श समाज के आवश्यक अंगों को किस प्रकार प्राप्त किया जा सकता है और इस कार्य के मध्य में आने वाली बाधाओं को किस प्रकार दूर किया जा सकता है। वास्तव में, "नागरिकशास्त्र सामाजिक सेवा में प्रयोग है।" (गेड्स)

अतएव इस शास्त्र में कला की विशेषता—व्यावहारिक प्रदर्शन भी आ जाता है। यह वह शास्त्र है जिसके अध्ययन से मनुष्य के जीवन में "सत्यं, शिवं, सुन्दरम्" की स्थापना होती है। कला का उद्देश्य भी "सत्यं शिवं सुन्दरम्" की स्थापना है, इसलिए नागरिकशास्त्र एक कला है।

निष्कर्ष—उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि नागरिकशास्त्र विज्ञान भी है और कला भी है। यह ठीक है कि इस शास्त्र को पूर्ण रूप से विज्ञान या कला की श्रेणी में नहीं रख सकते है, परन्तु यह भी ठीक है कि इसमें विज्ञान और कला दोनों के ही तत्व विद्यमान हैं। जब हम इसे विज्ञान के रूप में देखते हैं तब यह शास्त्र हमें बतलाता है कि समाज में रहने के उचित नियम अथवा ढंग क्या हैं और जब हम इसे कला के रूप में देखते हैं तो हमें यह बतलाता है कि उन नियमों को व्यवहार में किस प्रकार लाया जाय। विज्ञान के रूप में यह शास्त्र हमें बतलाता है

Scanned with CamScanner

कि हमारे अधिकार और कर्त्तव्य क्या हैं और कला के रूप में बतलाता है कि हमें इन कर्त्तव्यों और अधिकारों का व्यावहारिक जीवन में किस प्रकार उपयोग करना चाहिये। अतएव हम कह सकते हैं कि यह शास्त्र कला भी है और विज्ञान भी। डा० बेनीप्रसाद का यह कथन पूर्ण सत्य है, "नागरिकशास्त्र इस आशय में कला और विज्ञान दोनों है कि यह परिस्थितियों की खोज करता है और खोज के परिणामों को मानव-कल्याण की अभिवृद्धि में प्रयुक्त करता है।"

———

Scanned with CamScanner